उपसंहार

उपसंहार

प्रगतिशील रचनाकार के रूप में जगदीशचंद्र ने हिंदी साहित्य को अमूल्य योगदान दिया है। कहानी, नाटक विधा की अपेक्षा उपन्यास विधा में सबसे अधिक लेखन-कार्य उन्होंने किया है। उनके साहित्य में समाज के यथार्थ की प्रस्तुति हुई है। 'धरती धन न अपना' उपन्यास एक ऐसा दस्तावेज है, जिसमें सदियों से दबे-कुचले, अत्याचारीत दलित समाज की पीड़ा को समाज के सामने लाने का प्रयास लेखक जगदीशचंद्र ने किया है। दलित समाज की ओर देखने की जो उच्चवर्गीय मानसिकता है उसमें आज भी कोई परिवर्तन नहीं आया है। अज्ञान एवं अंधविश्वास में लिप्त दलित समाज को अमानवीय प्रवृत्तियों, अन्याय-अत्याचार का सामना करना पड़ता है। दलित लोगों को अपनी संपत्ति मानकर सवर्ण लोग उनका शोषण करते रहते हैं। शोषित एवं पद्दलित समाज का सजीव अंकन प्रस्तुत उपन्यास में हुआ है।

जगदीशचंद्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को देखने से यह परिलक्षित होता है कि प्रगतिशील विचारधारा को लेकर हिंदी साहित्य लेखन किया गया, उसमें जगदीशचंद्र का योगदान महत्त्वपूर्ण माना जाता है। उनका बचपन ननिहाल रलहन में बीता था। उच्चवर्गीय परिवार होने के कारण जगदीशचंद्र को गाँव में दलित बस्ती में जाने से घरवाले रोकते थे, परंतु मन की जिज्ञासा तृप्ति के लिए लेखक जगदीशचंद्र वहाँ जाते थे। देहातों में स्पृश्या-स्पृश्य भेद का कड़ाई से पालन किया जाता था फिर भी वे अपने दलित मित्र अमरू के घर खाना खाते थे। यहाँ पर लेखक जगदीशचंद्र विद्रोही बन जाते हैं। अपनी बेटी आरती के विवाह में भी जगदीशचंद्र जाति के बंधन का विरोध करते हैं। उनकी पत्नी श्रीमती क्षमा वैद्य जी ने अपने सुखों की अपेक्षा पति की सहायता करना प्रमुख कर्तव्य माना था। आकशवाणी विभाग में नौकरी करते हुए भी मित्रों के आग्रह पर खाली समय में लेखक जगदीशचंद्र लेखन-कार्य करते थे। उन्होंने सदा ही नौकरी और लेखनकार्य दोनों को अलग-अलग रखा था।

जगदीशचंद्र का साहित्य सृजन बहुआयामी है। कहानी, नाटक के साथ-साथ सबसे अधिक लेखन-कार्य उपन्यास विधा में किया है। स्वयं अर्थशास्त्र के छात्र होते हुए भी

हिंदी साहित्य में लेखन-कार्य करना यह जगदीशचंद्र की सबसे बड़ी विशेषता रही है। उनके साहित्य में हमें व्यापक अनुभव विश्व के साथ सूक्ष्म निरीक्षण दृष्टि एवं गहरी संवेदनशीलता का परिचय मिलता है। उच्चवर्गीय परिवार से होने के बावजूद भी जगदीशचंद्र ने समाज के पद्दलित, निम्न-मजदूर वर्ग का चित्रण अपने साहित्य में किया है। समाज की विभिन्न घटनाओं की अभिव्यक्ति उनके साहित्य में अत्यंत सरलता से हुई है। उनका व्यक्तित्व बहुमुखी रहा है। उनके व्यक्तित्व में प्रामाणिकता, संवेदनशीलता, मिलनसार, संघर्षशीलता आदि विशेषताएँ दिखाई देती हैं। उनके व्यक्तित्व की झाँकी का साहित्य पर प्रभाव परिलक्षित होता है।

विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित लेखक जगदीशचंद्र एक सशक्त रचनाकार माने जाते हैं। उन्होने जो देखा, अनुभूत किया उसका यथातथ्य चित्रण अपने साहित्य में किया है। 'धरती धन न अपना' उपन्यास की कथावस्तु का संगठन एवं अभिव्यक्ति की सफलता से लगता है कि गैर-दलित रचनाकार होते हुए भी दलित समाज के यथार्थ-चित्रण से उनके व्यक्तित्व की महानता का परिचय मिलता है।

आजकल साहित्य में उपन्यास विधा सबसे सशक्त विधा मानी जा रही है। समाज की विभिन्न घटनाओं का चित्रण उपन्यासों में होने लगा है। सन् 1960 से साहित्य में काफी परिवर्तन हुआ है। भाषा के नए रूप तथा शैलियों के प्रयोग से कथावस्तु में रोचकता लाने का प्रयास हुआ। कोई भी रचनाकार समाज से विमुख नहीं रहता। अतः रोजमर्रा की विभिन्न घटनाओं तथा परिवेश को लेकर साहित्यकार कथावस्तु का निर्माण करता है। उपन्यास विधा में प्राणतत्त्व के रूप में कथावस्तु मानी जाती है। कृति की सफलता कथावस्तु पर निर्भर होती है।

जगदीशचंद्र ने 'धरती धन न अपना' उपन्यास में स्वातंत्र्योत्तर काल के भारतीय दलित समाज को आधार बनाकर कथावस्तु का निर्माण किया है। पंजाब प्रांत में स्थित घोड़ेवाहा नामक गाँव है- जहाँ पर दलितों के साथ उच्चवर्गीय अमानवीय व्यवहार करते हैं। सदियों से उच्चवर्गियों के पैरों तले दबे-कुचले दलितों की व्यथा-कथा की अभिव्यक्ति जगदीशचंद्र ने प्रस्तुत उपन्यास में की है।

प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु का प्रारंभ काली के गाँव आगमन से होता है। छह साल शहर में रहने से वह अपने दलित बांधवों में आकर चेतना जगाने का प्रयास करता है। चौधरी हरनामसिंह की दहशत को ठुकराकर वह स्वाभिमानी जीवन जीना चाहता है। आर्थिक अभाव के कारण दलितों को अपने मालकियती की जमीन नहीं होती है। गाँव से दूर बस्ती बनाकर दलित लोगों को रहना पड़ता है। काली अपने पिता का पक्का मकान बनाने का अरमान पूरा करना चाहता है। उपन्यास की सभी घटनाएँ इसी के ईर्द-गिर्द घुमती नजर आती हैं।

दलित युवक मंगू चौधरियों की चापलूसी करता रहता है। काली के विरोध में निक्कू चमार को खड़ा कर मंगू काली को नीचा दिखाना चाहता है। इस प्रतिशोध की भावना से काली को चौधरियों के खिलाफ लड़ना पड़ता है। मंगू को अपने समाज के प्रति थोड़ी-सी भी चाह नहीं है। दलित युवतियों की इज्जत लूटने के लिए हरदेव चौधरी को उकसानेवाला मंगू कायर है। धर्म के बंधन समाज में इतने कड़े हैं कि दलितों को मंदिर प्रवेश निषिद्ध तथा सार्वजनिक स्थलों पर पानी भरना भी गुनाह माना जाता है। सवर्ण लोग दलितों की परछाई से भी परहेज रहते हैं। हिंदू-धर्म में फैले कर्मकाण्ड और बाह्याडंबर से परेशान होकर नन्दसिंह चमार जैसे कई लोग धर्म-परिवर्तन करते हैं। धर्म के ठेकेदारों द्वारा दलित मजदूर लोगों का शोषण होता है।

अपने हक के लिए पूरी चमादड़ी काली के नेतृत्व में बायकाट करती है। इस बायकाट से डॉ. बिशनदस तथा पादरी जैसे लोग अपना लाभ उठाना चाहते हैं, परंतु काली किसी के प्रति मोह न रखते हुए जाति-बांधवों के हक के लिए लड़ता रहता है। काली-ज्ञानों की त्रासद प्रेम-कहानी का अंकन प्रस्तुत उपन्यास में हुआ है। जाति-जाति में विभिन्न बंधनों का कड़ाई से पालन किया जाता है। समान गोत्र होने के कारण ज्ञानों और काली शादी नहीं कर पाते। लोकलाजवश ज्ञानों को घरवाले जहर देते हैं। जाति के नाम पर अमानवीय व्यवहार किए जा रहे हैं। अंत में काली का विक्षिप्त अवस्था में गाँव छोड़ना आदि घटनाओं से दलित समाज के यथार्थ का अंकन प्रस्तुत उपन्यास में जगदीशंचद्र ने किया है। कथावस्तु की दृष्टि से 'धरती धन न अपना' सफल उपन्यास रहा है।

साहित्य में मनोरंजन के साथ-साथ समाज के यथार्थ की प्रस्तुति की जा रही है, जो जैसा है उसका वैसा ही अंकन करना यथार्थ कहा जाता है। साहित्य में यथार्थ और आदर्श का समन्वित रूप होना आवश्यक होता है।

वर्णाष्ठित भारतीय समाज व्यवस्था में उच्च वर्ग और निम्न वर्ग यह दो भेद दिखाई देते हैं। निम्न वर्ग को दलित वर्ग भी कहा जाता है। 'दलित' शब्द का अर्थ है जो सदियों से उच्च वर्ग के रोब तले दबा, कुचला हुआ, अविकसित वर्ग कहा जाएगा। आर्थिक आभावों की चक्की में पीस रहे दलितों की स्थिति अत्यंत दयनीय है।

सदियों से उच्च वर्ग के रोब तले अन्याय-अत्याचारीत दलित समाज अपने अधिकारों से वंचित रहा है। मजदूरी, पशूपालन, बेगार उठाना आदि से दलित लोग अपना जीवनयापन कर रहे हैं। अस्पृश्य मानकर दलितों को सवर्णों द्वारा शिक्षा, मंदिर प्रवेश, सार्वजनिक स्थलों पर आने-जाने के लिए कड़े बंधन लगाए गए। चौधरी, जमींदारों के यहाँ मजदूरी करके दलित लोग अपना तथा अपने परिवार का पेट पालते हैं। ऐसे में दलित लोगों की अज्ञानता का लाभ उठाने के लिए पटवारी, दारोगा, साहूकार, मुंशी जैसे लोग टोह लगाते रहते हैं।

अंधविश्वासी दलित समाज में धर्म को लेकर विभिन्न प्रथा-परंपराएँ प्रचलित रही हैं। हिंदू धर्म में फैले बाह्याडंबर एवं कर्मकांड से दलित समाज त्रस्त होकर धर्म-परिवर्तन कर रहा है, परंतु धर्म-परिवर्तन से भी समस्या का हल नहीं होता। नन्दसिंह चमार पहले सिख धर्म और दोबारा ईसाई धर्म में परिवर्तन करता है, परंतु उसके जीवन में कोई फर्क नहीं पड़ता। अतः स्पष्ट है कि धर्म-जाति यह अफीम की तरह रहे हैं।

दलित समाज का यथार्थ देखते समय यह ज्ञात होता है कि अज्ञान एवं अंधविश्वास में लिप्त दलित समाज को उच्चवर्गीय समाज ने आगे नहीं आने दिया। धर्म-जाति के बंधनों में अटकाकर दलितों को पिछड़ा बना दिया है। आज शिक्षा के प्रसार से दलित समाज अपनी प्रगति कर रहा है। फिर भी दोगली मानसिकता में जी रहा उच्च वर्ग केवल 'वोट बैंक' के रूप में दलित समाज का प्रयोग कर रहा है। यह यथार्थता हमें स्वीकार लेनी पड़ेगी। लेखक जगदीशचंद्र स्वयं उच्चवर्गीय होते हुए भी उनकी दलित समाज के प्रति

हमदर्दी, तिलमिलाहट प्रस्तुत उपन्यास में व्यक्त हुई है। उन्होंने दलित समाज के यथार्थ को समाज के सामने बखूबी से उजागर किया है।

व्यक्ति समाज का एक अंग है। अतः जीवनयापन करते हुए उसे विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उच्चवर्गियों द्वारा शोषित दलित समाज में भी विभिन्न समस्याएँ होती हैं। अज्ञान एवं अंधविश्वास के कारण दलित समाज अन्य वर्गों से पिछड़ा हुआ है।

दलितों की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनीतिक समस्याएँ प्रस्तुत उपन्यास में अंकित की गई हैं। चौधरी, जमींदारों पर अवलंबित दलित लोगों की सामाजिक स्थिति अत्यंत दयनीय है। उच्चवर्गीय लोग दलित स्त्रियों को अपनी संपत्ति मात्र समझकर अन्याय-अत्याचार करते रहते हैं। अवैध यौन-संबंध के कारण अवैध संतानों की भी समस्या समाज के सामने खड़ी है। लड़के के जन्म प्रति दूराग्रह तथा अंधविश्वास के कारण स्त्री-भ्रूण हत्या की समस्याएँ दलित समाज में दिखाई देती हैं।

सदियों से आर्थिक अभावों की चक्की में पीस रहे दलितों को चौधरी, जमींदारों पर अवलंबित रहना पड़ता है। अज्ञान एवं अंधविश्वास के कारण दलित लोग रोजगार के नए-नए अवसर नहीं ढूँढ़ते। बल्कि पुश्तों से चली आ रही मजदूरी, बेगारी उठाना जैसे काम करते हैं। आर्थिक विपन्नता के कारण घर के बर्तन बेचने पड़ते हैं। यहाँ तक कि दलित स्त्रियाँ अपनी इज्जत बेचकर अपने तथा अपने परिवार का पेट पालती हैं। दलितों के अज्ञान का लाभ उठाकर पटवारी, पुलिस, मुंशी जैसे लोग दलित समाज को लूटते रहते हैं।

सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं के साथ-साथ दलित समाज में जाति-भेद, धर्म-परिवर्तन, ऊँच-नीच आदि का भी प्रभाव रहा है। वर्णाधिष्ठित समाज में शूद्र समझा जानेवाला वर्ग ही दलित है। दलित वर्ग और उच्च वर्ग में जाति-धर्म को आधार बनाकर बंधनों का कड़ाई से पालन किया जाता था। हिंदू धर्म मूल तत्त्वों से हट जाने पर लोगों का हिंदू धर्म पर से विश्वास ही उड़ गया। धर्म के ठेकेदारों ने धर्म के नाम पर आम आदमी को लूटा। इस लूट से त्रस्त होकर दलित समाज में धर्म-परिवर्तन की बाढ़-सी आयी, परंतु धर्म-परिवर्तन से दलित सुखी हुए क्या ? यह प्रश्न हमारे सामने उपस्थित होता है। यह

शोचनीय बात है कि आज भी धर्मांतर बड़ी मात्रा में हो रहे हैं। ऊँच-नीच एवं स्पृश्य-अस्पृश्य की समस्या मानवजाति के लिए कलंक ही मानी जाएगी।

राजनीतिक दृष्टि से भी दलित समाज बहुत पिछड़ चुका है। स्वातंत्र्योत्तर काल में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के बाद दलित समाज को सक्षम नेतृत्व नहीं मिला। अवसरवादी नेतृत्व, भ्रष्टाचार एवं स्वार्थी राजनेताओं के कारण आज भी दलित समाज एक 'वोट बैंक' के रूप में प्रयोग किया जा रहा है। इससे ज्यादा दलित समाज का अस्तित्व नहीं रह गया है। दलित समाज की समस्याओं की जड़ उनके अज्ञान एवं अंधविश्वासी होना है। विभिन्न समस्याओं का सामना करते हुए दलित समाज अपना जीवनयापन कर रहा है।

उपन्यास में भाषा तथा शैली का महत्त्व अनन्यसाधारण है। रचनाकार भाषा के माध्यम से ही अपने अनुभूति की अभिव्यक्ति कृति में करता है। जगदीशचंद्र के 'धरती धन अपना' उपन्यास की भाषा-शैली का मूल्यांकन करने के उपरांत जो तथ्य उजागर हुए हैं वे इस प्रकार हैं-

जगदीशचंद्र के उपन्यास 'धरती धन न अपना' में संस्कृत के तत्सम, तद्भव शब्दों का प्रयोग हुआ है। कथावस्तु का परिवेश पंजाबी होने से पंजाबी शब्दों की भरमार है। इसके साथ ही गुजराती, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी आदि शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। भाषा के विविध प्रयोग प्रयुक्त हुए हैं। कहावतें, मुहावरें, लोकक्तियाँ के साथ-साथ अलंकार तथा दलित समाज के अपशब्दों का भी प्रयोग हुआ है।

प्रस्तुत उपन्यास में विभिन्न भाषा के शब्दों के प्रयोग के साथ-साथ विभिन्न शैलियों का प्रयोग भी किया है। इसमें प्रतीकात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, प्रश्नोत्तर शैली, गीतात्मक शैली, सांकेतिक शैली, मनोवैज्ञानिक शैली, संवाद शैली, पूर्वदिप्ती शैली आदि शैलियों का प्रयोग परिलक्षित होता है। विवेच्य उपन्यास में प्रयुक्त भाषा-शैलियाँ पाठकों को संबंधित घटना पर सोचने के लिए बाध्य करती हैं। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जगदीशचंद्र का 'धरती धन न अपना' उपन्यास भाषा-शैली की दृष्टि से सफल, श्रेष्ठ एवं सराहनीय है।

प्रस्तुत शोध-कार्य की उपलब्धियाँ -

1. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के माध्यम से लेखक का बहुश्रुत व्यक्तित्व एवं कृतित्व समाज के हर एक व्यक्ति को प्रेरित करने का कार्य करता है। विवेच्य विषय के अध्ययन की यह महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।
2. विवेच्य उपन्यास में दलित समाज जीवन का यथार्थ अंकन किया है। इससे दलितों की वास्तविक एवं वर्तमान स्थिति का पता चलता है।
3. विवेच्य उपन्यास में दलित समाज में व्याप्त एवं अंधविश्वास से व्युत्पन्न समस्याओं को उजागर कर दलितों में चेतना जगाने का प्रयास किया है।
4. स्वातंत्र्योत्तर काल में भी दलितों के प्रति सवर्णों की मानसिकता दिखावटी है उसमें कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है।
5. नारी-विमर्श के दौर में दलित नारी के यथार्थ का कटु सत्य को विवेच्य उपन्यास के माध्यम से समाज के सामने उजागर किया है।
6. भारतीय समाज में धर्म का स्वरूप तथा धर्म के ठेकेदारों द्वारा शोषित दलित समाज का अंकन हुआ है, जिससे धर्म की समाज में भूमिका स्पष्ट होती है।
7. प्रस्तुत उपन्यास में राजनीतिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ दलित समाज अपनी प्रगति नहीं कर सका है। अवसरवादी नेताओं के कारण दलित समाज का राजनेताओं पर से विश्वास उड़ गया है। यह सत्य झुठलाया नहीं जा सकता है।
8. विवेच्य उपन्यास में शोषक-शोषित वर्ग की संघर्षगाथा का चित्रण हुआ है। दलित समाज अधिकारों के प्रति सचेत होकर संघर्ष कर रहा है।
9. प्रस्तुत उपन्यास में दलित समाज के यथार्थ की सफल अभिव्यक्ति से दलित और गैर-दलित साहित्यकार विचार-प्रवाह रहा है, वह मिटाने का कार्य हुआ है।

अध्ययन की नई दिशाएँ -

जगदीशचंद्र के साहित्य पर निम्नांकित विषयों को लेकर स्वतंत्र रूप से अध्ययन किया जा सकता है-

1. ''जगदीशंचद्र के उपन्यास : कथ्य एवं शिल्प''।
2. ''जगदीशचंद्र के उपन्यास साहित्य का अनुशीलन''।
3. ''जगदीशचंद्र के उपन्यासों में चित्रित समकालीन जीवन''।
4. ''जगदीशचंद्र के समग्र साहित्य का मूल्यांकन''।

अध्ययन के उपरांत उपर्युक्त शोध-विषय मेरे सामने उभरकर आए हैं। अतः इन विषयों पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य हो सकता है। वस्तुतः हर विषय की अपनी सीमा होती है। यहाँ मेरे शोध-विषय की भी सीमा है। आशा है कल आनेवाले शोधकर्ता उपर्युक्त विषयों पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य संपन्न करेंगे।